International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(1): 58-61
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 02-01-2026
Accepted: 21-01-2026
Publish : 22-01-2026

राहुल अहिरवार
शोधार्थी,
हिंदी अध्ययनशाला एवं शोध केंद्र,
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड-
विश्वविद्यालय,छतरपुर(म. प्र.)

शोध निर्देशक
डॉ.अजय कुमार चौधरी
सहायक प्राध्यापक,
शासकीय महाविद्यालय, खुरई,
सागर (म. प्र.)

Correspondence:
राहुल अहिरवार
शोधार्थी,
हिंदी अध्ययनशाला एवं शोध केंद्र,
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड-
विश्वविद्यालय,छतरपुर(म. प्र.)

पंकज सुबीर की कहानियों में बाजारवाद का बदलता - स्वरूप

राहुल अहिरवार, डॉ.अजय कुमार चौधरी

सारांश -

प्रस्तुत शोध आलेख समकालीन हिंदी कहानियों में पंकज सुबीर की कहानियों में बाजारवाद के बदलते स्वरूप को प्रस्तुत करता है। आज किस प्रकार से वर्तमान मे हिंदी कथा साहित्य जगत में प्रगति हो रही है,कहा जाता है "सहित्य समाज का दर्पण होता है। " जिस प्रकार से समाज बदलता है,साहित्य भी उसी तरह बदलता जा रहा है,आज का समय भूमंडलीकरण का समय है,जिसे वैश्वीकरण,बाजारीकरण आदि के नाम से भी जाना जाता है। आज कविता, कहानी,उपन्यास, नाटक, आलोचना जन -संचार माध्यमों पर बाजारवाद का व्यापक प्रभाव है भूमंडलीकरण, सूचना एवं संचार की क्रांति ने बाजारवाद का बहुत पोषण किया है। इसमें मनुष्यता के समक्ष नए-नए संकट उत्पन्न हो गए हैं,बाजारवाद 21वीं सदी के वैश्वीकरण की एक विश्व -स्तरीय व्यापार नीति है। जिसमें आज समाज का हर वर्ग आगे भी बढ़ रहा है और परेशान भी है। आज बाजारवाद अपने चरम सीमा पर पहुंच चुका है। इस शोध में पंकज सुबीर की कहानियों के कुछ अंशो को लिया गया है। जिसमें बाजारवाद के बदलते स्वरूप को दिखाया गया है। किस प्रकार से एक आम नागरिक इस बाजारवाद से में फंसकर अपने आप को अकेला, ठगा हुआ महसूस करने लगता है।

बीजशब्द- समकालीन हिंदी कहानी,पंकज सुबीर,बाजारवाद का बदलता स्वरूप।

शोध- आलेख

समकालीन हिंदी कहानी ने समय के साथ-साथ अपने स्वरूप और सरोकार में भी निरंतर परिवर्तन किया है,यह परिवर्तन हमें समकालीन साहित्यकार के साहित्य में दिखाई देता है अगर बात की जाए पंकज सुबीर की कहानियों की तो समय के साथ-साथ उनके लेखनी ने भी समय और परिस्थिति को देखकर अपना स्वरूप बदल दिया है। उनकी कहानियों मे हमें बाजारवाद के बदलते स्वरूप के दर्शन होते हैं। उदाहरण के लिए अगर हम पंकज सुबीर की कहानी संग्रह महुआ घटवारिन कहानी संग्रह,महानायक उर्फ कूल कूल तेल का सेल्समेन कहानी को देखें,तो यह कहानी,मैं शैली मे लिखी हुई है। कहानी चार मित्रों की वार्तालाप से शुरू होती है। "यह तुम्हारा मोबाइल भी तो पुराने मॉडल का है इसे कब बदलोगे सचिन ने मेरे मोबाइल की ओर इशारा करते हुए यह प्रश्न किया था,यह पुराना मॉडल है? अभी पिछले साल तो लिया है,जब लिया था तब सबसे लेटेस्ट मॉडल का था, और तुम कह रहे हो कि पुराने मॉडल का है कुछ जानते भी हो मोबाइल के बारे मे मैंने गुस्से से झल्लते हुए उत्तर दिया, सचिन ने कहा तेरे मोबाइल में तो दो एमपी का कैमरा भी नहीं है,और उसमें पांच एमपी का आ गया है,अब क्या जान लेगा तू कंपनी की। मैं नहीं करता कैमरा यूज़ उसे मुझे तो मोबाइल बात करने के लिए चाहिए"। यह वर्तमान की दशा है,हर युवा वर्ग नए-नए मोबाइलों को लेना चाहता है एक के बाद एक मोबाइल लॉन्च हो रहे हैं,हर दिन चाहे उसकी जरूरत हो या ना हो लेकिन वह लेना चाहता है अपने दोस्तों से अच्छा वाला और एक दूसरे से तुलना करता है मेरा मोबाइल तुमसे अच्छा है, मेरा तीस

हजार वाला है तुम्हारा दस हजार वाला यह समाज की एक धारणा बन चुकी। कहानी में एक लड़की है जिससे नायक प्यार करता है शिल्पा वह भी मॉडर्न जमाने की है, जब नायक रास्ते से जा रहा था तो थोड़ा झुकता है उस समय धोनी नामक पात्र ने झुकते हुए देखा " यह कौन सी चड्डी पहनते हो तुम?" कच्छा चड्डी, अंडरवियर और पर्यायवाची के नाम की गिनवाऊं कि बस? वही पहनता हूं जो पहनना चाहिए, तुमको इससे क्या? क्यों भाई शर्म नहीं आती सचिन ने कहा? " क्यों भाई शर्म क्यों आएगी शर्म तो तब आए जब बिना पैंट केवल कच्छे मे घूम रहा हूं मैंने उत्तर दिया । कच्छे मे घूमने कोई शर्म की बात नहीं है बस अच्छा ब्रांडेड होना चाहिए। मैंने पूछा कितने में आएगा यह स्टेटस छाप कच्छा? मात्र दो सौ मे । दो सौ रूपए में में सब कुछ खरीद लूं पैंट,शर्ट, कच्छा, बनियान सब। बीस रूपए के कच्छे के मे दो सौ रूपए क्यों दूं ? इसलिए दो ताकि शिल्पा हमेशा तुम्हारी ही रहे । कुछ देर बाद जब मैं दुकानसे निकला तो मेरे हाथ में एक पैकेट था, जिसमें एक जोड़ी चड्डी थी । चड्डी भी लेटेस्ट पर लेटेस्ट थी उसमें कुछ भी नहीं था केवल एक इलास्टिक थी,जिस पर कंपनी का नाम लिखा था इस इलास्टिक पर एकमात्र दो इंच के कपड़े की पट्टी एक ओर से प्रारंभ होकर दूसरी और जुड़ी थी। बात यहां केवल चड्डी (कच्छा)की नहीं है। आज छोटी से छोटी वस्तु भी बाजार के हिसाब से बिक रही है और हमें बाजार के हिसाब से ही चलना पड़ता है अगर वैसा नहीं चलते तो हमारी हंसी उड़ाई जाती है,मज़ाक बनाया जाता है हम लाख कोशिश कर ले कि हम अपने हिसाब से सारे काम करेंगे,लेकिन समाज और बाजार में सब कुछ बदल दिया है हमको समाज और बाजार के हिसाब से ही चलना पड़ता है। जैसे इस कहानी में धोनी ने अपने दोस्त का मज़ाक बनाया। शारुख का यह वाक्य "बाजार सारी व्यवस्थाएं करके चलता है अगर बाजार में तुमको दो सौ रूपए का कच्छा खरीदवाया है,तो अब यह बाजार की जिम्मेदारी है कि वह ऐसी व्यवस्था करे ताकि लोग जान सके कि तुमने दो सौ का ब्रांडेड कच्छा पहना है"। आखिर को तुम सबको पैंट खोल- खोल कर तो बताओगे नहीं? यह शरुख का वाक्य आज के समाज की असली सच्चाई है,बाजार में हर नई-नई चीजों को अपने हिसाब से डाल दिया है अगर उसने कुछ नया समान निकला है तो उसके साथ दूसरा भी ताकि दोनों एक के साथ दूसरे सामान की भी खरीदारी करे उपभोक्ता । नायक ने जब पहली बार वह ऊंची शर्ट और नीची पैंट पहनी तो बड़ा अजीब सा लग रहा था, कुछ भी करने के लिए जरा हाथ उठाओ तो नाभि से लेकर पसलियां तक सब कुछ खुल जाता था। शिल्पा जरूर प्रभावित हुई थी । "हूँ लुकिंग फंकी। " शिल्पा ने कहा था । पर मुझे थोड़ा खराब लग रहा था मैंने अपने दोस्त से कहा मुझे कुछ ऑड लग रहा है। ऑड और इन कपड़ो में तुम आदमी हो या पजामा जरा अपने आसपास तो देखो, हर कोई यह ही पहना है और तुम्हारे पहले वाले कपड़े थे वह ऑड थे कहते हुए धोनी ने मेरी पैंट के नीचे खिसका दिया कमर से खसक कर पैंट कूल्हे की चर्बी पर आकर टिक गई मुझे लगा कि कहीं चर्बी रोक नहीं पाई तो क्या होगा। इस कहानी में नायक से वह करवाया जाता है जो वह नहीं चाहता लेकिन समाज और बाजार की यही मांग है कि वह शिल्पा को इंप्रेस करने के लिए नए मॉडल का बने । कहानी इसी तरह आगे बढ़ती है " अरे मेरे बाप क्या बॉडी की सेविंग भी नहीं करवाएगा" शारुख ने चिल्लाते हुए कहा? बॉडी की सेविंग मैं अभी भी आश्चर्य में था!इसका मतलब है छाती और पेट के बालों की सफाई उनकी वजह से ही तुम अंकम्फर्टेबल हो रहे हो, वह तो तुमको ही करनी पड़ेगी और उसके लिए तो यह है स्पेशल रेजर मात्र आठ सौ रूपए,सचिन ने उत्तर दिया। पर यह तो पंद्रह रूपए का भी आता है? मैंने पूछा । आता है ना मगर इसकी क्वालिटी अलग है । बाजार ने पंद्रह वाली चीज को आज आठ सौ रूपए में ला दिया है काम दोनों का एक जैसा है केवल थोड़ी डिजाइन और उसके लुक में परिवर्तन करके छोटी सी चीज को बड़ा बनाकर बेच रही है। इसी तरह कहानी में दोस्तों ने पंद्रह सौ का बॉडी परफ्यूम खरीदवाया साथ ही साथ मुझसे पूछा तुम्हारी सैलरी कितनी है,पंद्रह हजार चलो लेते आओ आज तुम्हारी तंग जेब की व्यवस्था भी कर दी जाए,सचिन ने कहा यह लो तुम्हारा क्रेडिट कार्ड अब तंग होने का रोना मत रोना, जितनी चाहे खरीददारी करो सचिन ने मुस्कुराते हुए एक आसमानी और सुनहरे रंग का कार्ड मेरे हाथ मे रख दिया,पर इसके भी तो पैसे जमा करने ही होते हैं ना?हां पर चालीस दिन बाद तब तक ऐश कर ही सकते हो ना। इसी तरह न चाहते हुए भी दोस्तों ने बाइक -कार मे से एक लेने को कहा, सेकण्ड हैंड तीस हजार रूपए तक की और अपनी चेक बुक लेते आना सचिन ने कहा। करीब डेढ़ सौ जगह पर मेरे दस्तखत करवाए कई सारे दस्तखत करते-करते हाथ दुखने लगा, तोता परी और काले रंग वाली वह बाइक अब मेरी हो चुकी थी,स्टाइलिश मोटरसाइकिल शिल्पा इससे बहुत प्रभावित हुई थी नाइस बाइक शिल्पा ने बोला था मुझे बहुत अच्छा लगा था। आज इसी अच्छे के चक्कर में लोग क्या-क्या कर रहे हैं अपने घर के सामानों से लेकर जमीन -जायदाद सब कुछ बेच रहे हैं, केवल थोड़े के चक्कर में ताकि समाज उनको छोटा ना समझे,पिछड़ा हुआ ना समझे। मुझे लगा था मेरे दोस्त सही कर रहे हैं,मेरा हमेशा साथ देते हैं मैं उनको बेकार में बुरा मानता हूँ। आगे की कहानी मे दिखाया जाता है सदी के महानायक मेरे दरवाजे पर खड़े हैं,ठंडा ठंडा कूल कूल तेल खरीदने को कह रहे हैं,अकेले तेल खरीदने की बात थोड़ी ही है,और भी बहुत कुछ खरीदना है कहते हुए महानायक दरवाजे से हटकर अंदर आ गए

उसके पीछे कई सारे जाने- पहचाने चेहरे नजर आ रहे थे,बड़ी भीड़ थी उन चेहरों की सबसे,आगे महानायक की बहु थी,जो ढेर सारे सामान लिये उसके पीछे महानायक का बेटा था कई सारे सामान लिये मुस्कराया, दोनों के पीछे भी सारे लोग क्रिकेटर,फुटबॉलर, ओलंपिक, नायक- नायिका,गायक -गायिकाएं, बॉक्सर और जाने कौन-कौन सब कुछ सामान थमाते हुए मुस्कुरा रहे थे, सबसे आगे खड़ी विश्व की सबसे सुंदर औरत तो कुछ ज्यादा मुस्कुरा रही थी । मैं हैरत मे था यह सब मे कैसे खरीद सकता हूं?मेरे पास पैसे नहीं है,वह है ना तुम्हारे पास क्रेडिट कार्ड सचिन ने दिया था महानायक ने कहा लाइटो की झिलमिलाहट और जिंगल्स के शोर- शराबे के बीच में कब बेहोश हो गया मुझे पता ही नहीं चला कहानी यहीं खत्म हो जातीहै। कहानी तो खत्म हो जाती है पर यह हमको सोचने के लिये मजबूर करती है कि हमें बाजार से उतना ही उपयोग करना है जितना हमारे लिए लाभदायक है वरना हमको यह दिखावटी और बाजारवादी दुनिया कहां से कहां ले जाती है इसी के चक्कर में आज दिन प्रतिदिन गरीबी,भुखमरी व्याप्त हो रही है।

इसी तरह हम दूसरी कहानी का उदाहरण लेते हैं। "मिस्टर इंडिया" कहानी फिल्मी जगत के आधार पर रचि गई है, ऐसा लगता है । इस कहानी का मुख्य पात्र प्रद्युमन है जो मिस्टर इंडिया बनना चाहता है,उसके लिए उसे क्या-क्या कीमत चुकानी होती है । इस कहानी मे दिखाया गया है,कहानी की शुरुआत कुछ इस प्रकार होती है । "मैं तुम्हें डरा नहीं रहा हूं बल्कि तुमको उसे दुनिया की हकीकत बता रहा हूं,जहां तुम उतारने जा रहे हो, मैं यह भी नहीं कह रहा कि मत उतरो वह तुम्हारा अपना मामला है,मैं तो केवल यह चाह रहा हूं कि तुम अपने आप को मानसिक रूप से तैयार करके वहां जाओ"ताकि तुम्हें एकदम शॉक लगने वाली स्थिति का सामना न करना पड़े धीरेंद्र सर ने कहा । मगर सर क्या जरूरी है कि ऐसा सबके साथ ही होता है कुछ अटकते हुए प्रद्युमन ने कहा। बिल्कुल जरूरी है क्योंकि जहां तुम जा रहे हो वहां हर चीज की एक निश्चित कीमत है। यह साहित्य,यह संस्कृति,यह विचारधाराएं हैं,यह सब तो दिमागों के लिए हैं और बाजार कब चाहेगा कि दिमागों का विकास हो उसे तो शरीर चाहिए ताजा और जवान जिस्म आज जो दौर है,यह शरीर का दौर है,यह बाजार का दौर है, कुछ सालों पहले तक दिमागों का दौर हुआ करता था,और तब इसी बाजार को कोई पूछता भी नहीं था दिमागों को विचार नियंत्रित करते हैं किंतु शरीर को बाजार नियंत्रित करता है,इसलिए बाजार ने पहले विचारों को समाप्त किया और फिर दिमागों को और उसके बाद शरीर उसकी कब्जे में आ गए। धीरेंद्र सर ने लंबी बात को समाप्त कर बचे हुए पैग को एक लंबे घूंट में समाप्त कर दिया तुमने देखा होगा,कि आजकल स्त्री से ज्यादा पुरुष का अधनंगा जिस्म दिखता है विज्ञापनों मे, वह इसलिए क्योंकि विज्ञापन वाले जान गए हैं । कि अगर पुरुष को महिला का जिस्म विज्ञापनों में देखना अच्छा लगता है तो महिला को पुरुषों का, तुम भी क्योंकि बाजार के प्रतिनिधि बनने जा रहे हो इसलिए तुम्हें भी नंगा कर देगा, उतार देगा,तुम्हारे सारे कपड़े और खड़ा कर देगा तुमको सो विंडो में, ताकि वह आकर्षित कर सके उन स्त्रियों को जो खरीददार बनकर बाजार में घूम रही है। मैं चलूँ प्रद्युमन ने कहा, बस-बस जाओ और एक बात याद रखना,कि जहां तुम जा रहे हो वहां सफलता ही सबसे महत्वपूर्ण है सफलता पाने के लिए आपने क्या रास्ता अपनाया कोई मायने नहीं रखता । धीरेंद्र सर ने कहा यह धीरेंद्र सर का अपने शिष्य समझना कि आज के दौर में क्या सही है क्या नहीं लेकिन युवा वर्ग अपने से बड़ों की बात कहां मानता है उसे तो लगता है कि मैं ही सही हूं और वह ऐसे कदम उठाता है जिसका परिणाम बहुत गलत होता है। कहानी में प्रद्युमन को पांच सौ प्रतिभागियों में अंतिम पचास तक आने का यह सफर उसे बहुत ज्यादा मुश्किल नहीं लगा । रोज वह सेल फोन पर धीरेंद्र सर से बात करता रहा। धीरेंद्र सर का लगभग एक ही जवाब मिलता है "गुड यू डिजर्व इट,याद रखना सफलता तुम्हारा सबसे बड़ा सपना है"इसलिए केवल उसी को याद रखना । आने वाले दो दिनों में अंतिम पचास का दिन- दिन भर का सत्र होना है, जिसमे इन पचास में से केवल दस का चयन किया जाएगा और फिर दस ही भाग लेंगे इंडिया के सबसे सुंदर पुरुष के भव्य और रंगारंग समारोह में । प्रद्युमन आगे की शुरुआत के लिए मिस्टर खन्ना सर से मिलने गया,खन्ना सर ने सुधा जैमनी मैम के पास भेजा, तुम्हारी घबराहट दूर हो जाएगी। सुधा जैमनी मैम का आली -शान महल सामान घर के भव्य डाइनिंग रूम में बैठकर उसे ऐसा लगा, जैसी स्वर्ग मे आ गया हो अभी तक फिल्मों में इस तरह के दृश्य देखा था,समझता था कि यह सब फ़िल्मी सेट होते हैं, वास्तव में ऐसे घर थोड़ी ही होते होंगे पर यहां का दृश्य तो फिल्मी दृश्य से भी आगे था। खाने के बाद अच्छा मैं चलूं अब इतनी रात के कहां जाओगे यही रुक जाओ,सुबह ड्राइवर तुम्हें इवेंट हाल पहुंचा देगा, सुधा जैमनी मैम के स्वर में आदेश का पुट अधिक था। किसी आज्ञाकारी बच्चे की तरह प्रद्युमन कमरे में चला आया चेंज करके बिस्तर पर लेटा तो थकान के कारण आंख जल्दी ही लग गई,और फिर जल्दी ही खुल भी गई क्योंकि कैमरा रोशनी और तेज सुगंध से भरा हुआ था,सुधा जैमनी मैम उसके ऊपर झुकी हुई थी प्रद्युमन ने असहज होकर उठने का प्रयास किया,पर तभी उसके कानों में धीरेंद्र सर की बात गूंजी वहां पर सफलता का हर एक रास्ता बिस्तर से होकर जाता है,उसने एक बार सुधा जैमनी मैम की आंखों में झांक कर देखा फिर आंखें बंद कर दी एक तेज चक्रवात आया और उसे अपने साथ उड़ा कर आसमान पर ले गया, फिर धीरेंद्र सर की बात याद आई वहां सफलता महत्वपूर्ण है,रास्ता नहीं और फिर उसने अपने आप को पूरी तरह से उस चक्रवात के हवाले कर दिया। बाद के दो दिन मेरे लिए कोई ज्यादा उत्सुकता वाले नहीं थे । धीरेंद्र सर से बात हुई उनको मैंने पूरी बात बताई उधर से जवाब आया था। "वेल इट जस्ट बिगनिंग

माय, बाय कीप युवर सेल्फ रेडी फॉर एवरी थिंग । इवेंट में सुधा जैमनी मैम दोनों दिन मुख्य निर्णायक की भूमिका में थी, मेरा नाम पहले नंबर पर टॉप टेन में था। ड्रेस डिजाइनर, हेयर एंड ब्यूटी एक्सपर्ट पर्सनालिटी एक्सपर्ट,जैसे कई सारे एक्सपर्ट उन दस लड़कों पर काम कर रहे थे मेगा फंक्शन के लिए उन सबों को तैयार कर रहे थे। तुम्हारी अंदर एक अलग कुछ जरूर है जो तुम्हें बाकी लड़कों से ऊपर रखे हुए हैं,और मेरे ख्याल से वह है तुम्हारी फ्रेशनेस तुम्हारी ताजगी सोनू जार्ज ने प्रद्युमन की ड्रेस ठीक करते हुए कहा। थैंक्स अगेन सर पर मेगा इवेंट को लेकर तो मन बहुत घबरा रहा है जाने क्या होगा । घबराहट तो होना ही है,तुम एक छोटे से कस्बे से आये एक साधारण से लड़के हो एक झटके में तुम आसमान के सितारों पर खड़े हो सकते हो उसके बाद पीछे मुड़कर देखना भी नहीं सोनू जॉर्ज ने कहा । और मेरे गुरु ने मुझे यह कह कर भेजा है की सफलता पर नजर रखना और यहां पर सफलता के रास्ते जो कुछ भी हो उसको कड़वा घूंट समझकर पी लेना प्रद्युमन ने उत्तर दिया । तब तो तुम्हें सबसे बड़ा मंत्र मिल चुका है,चलो आज डिनर पर चलो मेरे साथ सोनू जार्ज ने कहा होटल में खाना खाने के दौरान कई सारी बातें हुई सोनू जार्ज ने अपने बारे में काफी कुछ बताया। जब खाना खत्म हुआ तब तक बारह बच चुके थे। नैपकिन से हाथ पोंछते हुए सोनू ने कहा चल यही होटल के रूम लेकर रुक जाते हैं कहां जाएंगे इतनी दूर अब । रूम पहुंचने के बाद सोनू शावर लेने चला गया और प्रद्युमन टीवी देखने लगा सोनू टॉवल लपेटे हुए आया और बोला चलो सोते हैं,प्रदु फिर तुझे सुबह जल्दी उठना है लाइट बंद कर दी अभी प्रद्युमन को नींद भी नहीं आई थी कि प्रद्युमन ने दोनों हाथों से सोनू जार्ज को हटाने का प्रयास किया मगर असफल रहा वह पूरी ताकत लगाकर हटाने की कोशिश कर रहा था,कि फिर धीरेंद्र सर का स्वर गूंज उठा "दिस इस बिगिनिंग माय बाय कीप युवर सेल्फ रेडी फॉर एवरी थिंग" प्रद्युम्न ने धीरे-धीरे अपने आप को ढीला छोड़ दिया सोनू जॉर्ज तेज अंधड़ बनकर गुजरने लगा। प्रद्युमन अपना पूरा नियंत्रण उस अंधड़ के हवाले कर दिया और बहता चला गया तेज हवा के इशारे पर । अगले दिन प्रद्युमन ने धीरेंद्र सर को बताइए,उन्होंने कहा था प्रद्युमन कुछ मर्यादाओं के चलते बस यही बात में खुलकर नहीं कर पा रहा था, लेकिन मैं बार-बार जिसके बारे में कहता था,कि हर बात के लिए तैयार रहना तो वह बात यही थी सुधा जैमनी वाली घटना किसी भी पुरुष के लिए संभावित घटना है,पर यह जो दूसरी घटना,यह तो खैर उस सोनू जार्ज और सुधा जैमनी को ग्रिप में रखना उनके बिस्तरों में तुम्हारी सफलता की चाबी छुपी है। इसी तरह प्रद्युमन को दो लोगों के साथ रवि कौशल,तरुण कपूर बिस्तर गुजारनी पड़ती है । इवेंट को जीतने के लिए । इवेंट में पांच राउंड हुए उनमें केवल तीन प्रतियोगी ही रह गए थे,प्रद्युमन और दो लड़के, प्रद्युमन का नाम जैसे ही उद्घोषक ने लिफाफा खोलकर नाम पढ़ा हाल तालिया से गूंज उठा रोशनियां उसके आसपास झिलमिलने लगी प्रद्युमन जैसे ही चलकर स्टेज के सामने वाले हिस्से में आया, वैसे ही कोने में खड़े विज्ञापन कंपनी वाले उसकी तरफ अपनी- अपनी कंपनियों के टैग लगाने लगे कंपनी वालों ने उसके सारे कपड़े फाड़ कर फेंक दिए, उसे निर्वस्त्र कर दिया, सारे शरीर में कंपनियों के टैग चिपके हुए थे। भीड़ चीख रही थी चिल्ला रही थी उनको अपना मिस्टर इंडिया मिल चुका था। आज बाजारवाद इतना हावी होता जा रहा है कि उससे निकालना बहुत मुश्किल लगने लगा है इस कहानी में भी यही दिखाई दे रहा है उसे कोई परवाह नहीं कि लोगों का कितना बुरा हाल है उसे तो केवल अपनी वस्तुओं को बेचना है और लाभ कमाना है यही बाजारवाद का उद्देश्य है लेकिन हमको अपनी जरूरत के हिसाब से चलना पड़ेगा ।

निष्कर्ष

बाजार नाम की संस्था आदिम समाज के लिए भी रही है और आज के समाज के लिए भी इसलिए बाजार से बैर करके आप अपना समाज और अपना जीवन चला सके इसकी संभावना नहीं है । पंकज सुबीर की इन दो कहानियां के माध्यम से कहा जा सकता है कि बाजारवाद ने किस प्रकार से समाज पर कब्जा कर लिया है जहां महानायक उर्फ कूल-कूल तेल का सेल्समेन कहानी में नायक अपने आप को बाजारवाद पर इतना घिरा पता है, उसे कुछ समझ नहीं आता क्या करे उसकी सारी आमदनी इस बाजारवाद के अनोखे तिलास्मी जाल मे खत्म हो जाती है । अंत में वह बेहोश हो जाता है। दूसरी कहानी मिस्टर इंडिया में प्रद्युमन को वह मिलता है,जो वह चाहता है, मिस्टर इंडिया का खिताब पर उसके लिए उसे बहुत महंगी कीमत भी चुकानी होती है । स्त्री के साथ-साथ पुरुष के साथ भी बिस्तर बिताना पड़ता है, अतः इन दो कहानियों के माध्यम से कहा जा सकता है पंकज सुबीर ने किस प्रकार से इस बदलते दौर में है कहानी लिखी हैं, जो वर्तमान के परिदृश्य को उजागर कर रही हैं आज युवा पीढ़ी के साथ-साथ समाज का हर वर्ग बाजार वर्ग के चमक धमक पर खोया है बाजारवाद में समाज को आर्थिक रूप से तो मजबूत किया है लेकिन वैचारिक पारिवारिक रूप से विघटन को जन्म दिया है। बाजारवाद समाज के लिए अच्छा भी है बुरा भी यह लोगों की दृष्टि उसके उपयोग पर निर्भर करता है।

संदर्भ ग्रंथ -

1 डॉ. खन्ना गीतू,साहित्य के विविध विमर्श,विकास बुक कंपनी, नई दिल्ली 110002

2 सुधीर पंकज, महुआ घटवारिन कहानी संग्रह, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018

3.सुबीर पंकज महुआ घटवारिन (कहानी संग्रह), प्रथम कहानी महानायक उर्फ कूल कूल तेल का सेल्समेन, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018

4.सुबीर पंकज, महुआ घटवारिन (कहानी संग्रह), तीसरी कहानी, मिस्टर इंडिया, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली 2018

5.जोशी शरण, मीडिया और बाजारवाद, Pub। isher: Radhakrishna Prakash an Edition:2024.Ed5th